भगत कबीर – सबद ३

अब मोहि जलत राम जलु पाइआ ॥

रागु गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२३

अब मोहि जलत राम जलु पाइआ ॥
राम उदकि तनु जलत बुझाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
मनु मारण कारणि बन जाईऐ ॥
सो जलु बिनु भगवंत न पाईऐ ॥१॥
जिह पावक सुरि नर है जारे ॥
राम उदकि जन जलत उबारे ॥२॥
भव सागर सुख सागर माही ॥
पीवि रहे जल निखुटत नाही ॥३॥
कहि कबीर भजु सारिंगपानी ॥
राम उदकि मेरी तिखा बुझानी ॥४॥१॥

सार: द्वैत और अद्वैत के विचार हमें सृष्टि की आपसी जुड़ाव की गहरी समझ प्रदान करते हैं। द्वैत उन विरोधाभासों को दर्शाता है जो हमारे अनुभवों को आकार देते हैं जबकि अद्वैत हमें इन भिन्नताओं से ऊपर उठकर गहरे एकत्व को पहचानने के लिए प्रेरित करता है। इन दोनों विपरीत शक्तियों को समझकर हम अस्तित्व की विविध ऊर्जाओं के बीच संतुलन विकसित कर सकते हैं। यह दृष्टिकोण हमें जीवन की जटिल बुनावट की सराहना करने में मदद करता है और यह याद दिलाता है कि हमारे मतभेदों भिन्नताओं के बावजूद हम सभी ब्रह्मांड की एकता का हिस्सा हैं।

अब मोहि जलत राम जलु पाइआ ॥
द्वैत की आग में जलते मन को एकता का ज्ञान शांति प्रदान करता है।

राम उदकि तनु जलत बुझाइआ ॥१॥ रहाउ ॥

एकता की समझ द्वन्द की पीड़ा से जलते हुए मन को शांत करती है। (१)(विराम)

मनु मारण कारणि बन जाईऐ ॥

मन को वश में करने के लिए कुछ लोग जंगल में चले जाते हैं।

सो जलु बिनु भगवंत न पाईऐ ॥१॥

समस्त सृष्टि के आपसी सम्बन्ध को समझे बिना, कोई भी सर्वव्यापी जागरूकता को नहीं पहचान सकता। (१)

जिह पावक सुरि नर है जारे ॥

द्वैत ने श्रेष्ठ देवताओं और साधारण नश्वर मनुष्यों, दोनों को भस्म कर दिया है।

राम उदकि जन जलत उबारे ॥२॥

लेकिन एकता के ज्ञान ने द्वैत से जूझ रहे लोगों को आध्यात्मिक रूप से बचा लिया है। (२)

भव सागर सुख सागर माही ॥

विशाल और भयावह विश्व-सागर में एक आंतरिक शांत महासागर मौजूद है।

पीवि रहे जल निखुटत नाही ॥३॥

मैं लगातार एकता के लाभ का उपभोग करता हूं लेकिन न यह कभी खत्म होता है और न ही यह कभी खत्म होता दिखता है। (३)

कहि कबीर भजु सारिंगपानी ॥

कबीर चिंतन करने के लिए कहते हैं, जैसे एक तीरंदाज अपने लक्ष्य में सटीकता सुनिश्चित करने के लिए निशान पर ध्यान केंद्रित रखता है।

राम उदकि मेरी तिखा बुझानी ॥४॥१॥
एकता के ज्ञान ने मेरी आध्यात्मिक प्यास को बुझा दिया है। (४)(१)

तत्त्व: कबीर हमें सुझाव देते हैं कि अपने विचारों और इरादों को सभी प्राणियों को जोड़ने वाली एकता पर केंद्रित करें। वह इसकी तुलना एक तीरंदाज़ से करते हैं जो अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखता है। इस तरह का ध्यान हमें द्वैत और अहंकार की व्याकुलता से ऊपर उठने में मदद करता है।यह गहरा ज्ञान हमारे अस्तित्व को समझने में सहायता करता है, जिससे हम ब्रह्मांड में व्याप्त शांति और सामंजस्य के साथ खुद को जोड़ पाते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com